ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 7, Issue 10, Oct 2017 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

आधुनिक भारतीय साहित्य के महाकाव्यों में स्त्री की भूमिका

डॉ सिद्धि जोशी
सह-आचार्य हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, झुंझुनूं

सार

आधुनिक भारतीय साहित्य के महाकाव्यों में महिलाओं का चित्रण उनकी भूमिकाओं, चुनौतियों और एजेंसी की सूक्ष्म खोज द्वारा चिह्नित है। आधुनिक भारतीय महाकाव्य, जबकि अक्सर पारंपरिक कथाओं में निहित होते हैं, महिलाओं के जीवन को उन तरीकों से पुनर्व्याख्या और पुनर्कल्पित करते हैं जो समकालीन सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकताओं के साथ प्रतिध्वनित होते हैं। ये कथाएँ अक्सर महिला पात्रों की ताकत, लचीलापन और जटिलता को उजागर करती हैं, उन्हें व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तनों दोनों में केंद्रीय व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती हैं। महिलाओं के निष्क्रिय या गौण पात्रों के रूप में पारंपरिक चित्रण से अधिक सक्रिय और सशक्त भूमिकाओं में बदलाव आधुनिक भारतीय महाकाव्यों की एक परिभाषित विशेषता है। इन कथाओं में महिलाओं को नायक के रूप में चित्रित किया गया है जो पितृसत्तात्मक संरचनाओं को नेविगेट और चुनौती देती हैं, अपनी स्वायत्तता का दावा करती हैं और महाकाव्य कथाओं को सामने लाने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे विषय प्रचलित हैं, जो भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति बदलते दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। इसके अलावा, आधुनिक भारतीय साहित्य अक्सर नारीवादी लेंस के माध्यम से रामायण और महाभारत जैसे शास्त्रीय महाकाव्यों पर फिर से विचार करता है और उनकी पुनर्व्याख्या करता है। यह पुनर्कल्पना सीता और द्रौपदी जैसी प्रतिष्ठित महिला पात्रों की भूमिकाओं की आलोचनात्मक जांच करने की अनुमति देती है, जो उनके अनुभवों और संघर्षों पर नए दृष्टिकोण प्रदान करती है। निष्कर्ष रूप में, आधुनिक भारतीय साहित्य के महाकाव्यों में महिलाओं की भूमिका परंपरा और आधुनिकता के गतिशील अंतर्संबंध की विशेषता है। ये कथाएँ न केवल महिलाओं की ताकत और एजेंसी का जश्न मनाती हैं, बल्कि लिंग और सामाजिक परिवर्तन पर चल रहे विमर्श से भी जुड़ती हैं, जिससे वे साहित्यिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती हैं।

मुख्य शब्द: *आधुनिक भारतीय, महाकाव्यों, स्त्री*

परिचय:

आधुनिक भारतीय साहित्य के महाकाव्यों में महिलाओं की भूमिकाओं की खोज से कहानियों का एक समृद्ध ताना-बाना सामने आता है जो भारतीय समाज के भीतर लिंग, पहचान और शक्ति की विकसित होती गतिशीलता को दर्शाता है। जबकि रामायण और महाभारत जैसे पारंपरिक भारतीय महाकाव्यों को लंबे समय से सम्मानित किया जाता रहा है, उनमें महिलाओं का चित्रण अक्सर आलोचनात्मक जांच का विषय रहा है। इन शास्त्रीय रचनाओं में आम तौर पर महिलाओं को ऐसी भूमिकाओं में दर्शाया गया है जो महत्वपूर्ण होते हुए

भी पितृसत्तात्मक मानदंडों और अपेक्षाओं द्वारा परिभाषित की जाती हैं। हालाँकि, आधुनिक युग में भारतीय साहित्य के परिदृश्य में गहरा बदलाव आया है, जो महाकाव्य कथाओं और उनके भीतर के पात्रों की पुनर्कल्पना लेकर आया है। आधुनिक भारतीय साहित्य में कई तरह की शैलियाँ और शैलियाँ शामिल हैं, फिर भी यह लगातार समकालीन मुद्दों और सामाजिक बदलावों से जुड़ने का प्रयास करता है। इनमें से, महाकाव्य कहानियों में महिलाओं का चित्रण एक विशेष रूप से प्रमुख विषय के रूप में सामने आता है। आधुनिक युग के लेखकों और कवियों ने प्राचीन महाकाव्यों पर फिर से विचार किया है, महिलाओं को न केवल परिधीय पात्रों के रूप में बल्कि केंद्रीय नायक के रूप में चित्रित करके उनमें नया जीवन और प्रासंगिकता भर दी है, जिनके कार्य और निर्णय कथा को आगे बढ़ाते हैं। इस पुनर्कल्पना में अक्सर प्रतिष्ठित महिला पात्रों का आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन शामिल होता है, उन्हें ऐसे प्रकाश में प्रस्तुत किया जाता है जो उनकी ताकत, लचीलापन और एजेंसी को उजागर करता है। इस लेंस के माध्यम से, सीता, द्रौपदी और अन्य जैसे पात्रों को अधिक गहराई और जटिलता के साथ खोजा जाता है, जो उनके आंतरिक जीवन और उनके द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। ये पुनर्व्याख्याएँ न केवल प्रसिद्ध कहानियों पर नए दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, बल्कि समकालीन भारत में लिंग, शक्ति और पहचान पर व्यापक विमर्श से भी जुड़ती हैं।

इसके अलावा, आधुनिक भारतीय महाकाव्यों में अक्सर नई महिला पात्रों को पेश किया जाता है जो आज के समाज में महिलाओं की चुनौतियों और जीत को दर्शाती हैं। ये पात्र लैंगिक भेदभाव, सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत स्वायत्तता जैसे मुद्दों से जूझते हैं, जो तेजी से बदलती दुनिया में महिलाओं के चल रहे संघर्षों और आकांक्षाओं को दर्शाते हैं। उनकी कहानियाँ महाकाव्य कथाओं की स्थायी प्रासंगिकता और क्रमिक पीढ़ियों के साथ अनुकूलन और प्रतिध्वनित होने की उनकी क्षमता के प्रमाण के रूप में कार्य करती हैं। इस संदर्भ में, आधुनिक भारतीय साहित्य के महाकाव्यों में महिलाओं की भूमिका परंपरा और आधुनिकता के प्रतिच्छेदन की जाँच करने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल बन जाती है। यह एक सम्मोहक लेंस प्रदान करता है जिसके माध्यम से यह समझा जा सकता है कि साहित्य किस तरह से सामाजिक मूल्यों और मानदंडों को प्रतिबिंबित और आकार दे सकता है। इन कथाओं में गहराई से जाने पर, हम आधुनिक भारत की महाकाव्य कहानियों में महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली विविध और गतिशील भूमिकाओं की गहरी समझ प्राप्त करते हैं, और जिस तरह से ये कहानियाँ लिंग और समाज के बारे में हमारी समझ को प्रेरित, चुनौती और रूपांतरित करती रहती हैं।

आधुनिक भारतीय साहित्य में महाकाव्यों की पुनर्व्याख्या अक्सर व्यापक सामाजिक टिप्पणी के लिए एक वाहन के रूप में कार्य करती है, जो महिलाओं के बहुआयामी अनुभवों पर प्रकाश डालती है और लंबे समय से चली आ रही रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को चुनौती देती है। समकालीन लेखकों के नज़रिए से, महाकाव्य अतीत के स्थिर अवशेष नहीं हैं, बल्कि जीवित दस्तावेज़ हैं जिन्हें वर्तमान मुद्दों को संबोधित करने और सोचने के नए तरीकों को प्रेरित करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है। इस साहित्यिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू महिलाओं की एजेंसी और स्वायत्तता का चित्रण है। पारंपरिक कथाओं में, महिलाओं की भूमिकाएँ अक्सर सामाजिक अपेक्षाओं और मानदंडों द्वारा सीमित होती थीं, जिससे उनकी स्वतंत्र कार्रवाई की गुंजाइश सीमित

हो जाती थी। हालाँकि, आधुनिक पुनर्कथन अक्सर महिलाओं को सक्रिय एजेंट के रूप में चित्रित करते हैं जो चुनाव करती हैं, अधिकार को चुनौती देती हैं और अपनी व्यक्तिगत पहचान का दावा करती हैं। यह बदलाव न केवल पात्रों को स्वयं पुनर्परिभाषित करता है बल्कि पाठकों को पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और शक्ति संरचनाओं पर सवाल उठाने और उनका पुनर्मूल्यांकन करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। उदाहरण के लिए, रामायण के कई आधुनिक पुनर्कथनों में, सीता को न केवल एक समर्पित पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, बल्कि अपनी इच्छाओं, संघर्षों और शक्तियों के साथ एक जटिल चरित्र के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। लेखक उसके दृष्टिकोण को अधिक गहराई से खोजते हैं, उसके लचीलेपन और नैतिक दृढ़ता के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। इसी तरह, महाभारत की द्रौपदी को अक्सर एक शक्तिशाली व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जाता है जो अपनी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को बुद्धिमत्ता और एजेंसी के साथ पार करती है, अपने द्वारा सामना किए जाने वाले अन्याय को चुनौती देती है और घटनाओं के पाठ्यक्रम को प्रभावित करती है।

इसके अलावा, समकालीन महाकाव्यों में नए महिला पात्रों की शुरूआत उन मुद्दों की खोज करने की अनुमति देती है जो आधुनिक समाज के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक हैं। ये पात्र अक्सर आज महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली अंतर-चुनौतियों को मूर्त रूप देते हैं, जैसे कि परंपरा और आधुनिकता को संतुलित करना, पेशेवर और व्यक्तिगत पहचान को आगे बढ़ाना और प्रणालीगत असमानताओं का सामना करना। उनकी कहानियाँ भारत में विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की महिलाओं के विविध अनुभवों का प्रतिबिंब हैं। आधुनिक भारतीय महाकाव्यों में महिलाओं का चित्रण एकजुटता और बहनचारे के विषयों से भी जुड़ा है। ये कथाएँ अक्सर महिलाओं के बीच संबंधों और बंधनों को उजागर करती हैं, उन्हें समर्थन, शक्ति और सशक्तिकरण के स्रोत के रूप में चित्रित करती हैं। महिला एकजुटता पर यह ध्यान पारंपरिक साहित्य में महिलाओं के अक्सर अलग-थलग और खंडित चित्रण के लिए एक प्रति-कथा प्रदान करता है, जो सामाजिक चुनौतियों पर काबू पाने में सामूहिक कार्रवाई और आपसी समर्थन के महत्व पर जोर देता है। इसके अलावा, महाकाव्यों की आधुनिक पुनर्व्याख्या अक्सर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों की आलोचनात्मक जाँच के साथ होती है। लेखक उन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों में गहराई से उतरते हैं, जिन्होंने मूल कथाओं को आकार दिया और पता लगाया कि ये परिस्थितियाँ समकालीन समाज को कैसे प्रभावित करती हैं। यह आलोचनात्मक दृष्टिकोण न केवल कहानियों की समृद्धि और जटिलता को बढ़ाता है, बल्कि पाठकों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से अधिक विचारशील और चिंतनशील तरीके से जुड़ने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। कुल मिलाकर, आधुनिक भारतीय साहित्य के महाकाव्यों में महिलाओं की भूमिका कहानी कहने की गतिशील और विकासशील प्रकृति का प्रमाण है। ये कथाएँ अतीत की पुनर्कल्पना करने, वर्तमान चुनौतियों का समाधान करने और अधिक न्यायसंगत भविष्य की कल्पना करने के लिए एक शक्तिशाली मंच प्रदान करती हैं। महिलाओं के अनुभवों और दृष्टिकोणों को केंद्र में रखकर, आधुनिक भारतीय महाकाव्य लिंग, पहचान और सामाजिक न्याय की व्यापक समझ में योगदान करते हैं, जिससे वे साहित्यिक कैनन का एक आवश्यक और प्रभावशाली हिस्सा बन जाते हैं।

सांस्कृतिक प्रभाव और स्वागत

आधुनिक भारतीय महाकाव्यों में महिलाओं की भूमिकाओं की पुनर्कल्पना ने महत्वपूर्ण सांस्कृतिक वार्तालापों को जन्म दिया है। ये कथाएँ पाठकों को गहराई से जड़ जमाए सांस्कृतिक मानदंडों पर पुनर्विचार करने और लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय के बारे में संवाद करने की चुनौती देती हैं। महिलाओं को जटिल और बहुआयामी पात्रों के रूप में प्रस्तुत करके, आधुनिक साहित्य पारंपरिक मूल्यों की पुनर्परीक्षा को आमंत्रित करता है और प्रगतिशील सोच को प्रेरित करता है। ये साहित्यिक कृतियाँ अक्सर फिल्म, टेलीविज़न और थिएटर सहित विभिन्न मीडिया में अनुवाद और रूपांतरण के माध्यम से व्यापक दर्शकों तक पहुँचती हैं। इन कहानियों के दृश्य और प्रदर्शनकारी पुनर्कथन महिलाओं की पुनर्कल्पित भूमिकाओं को और भी व्यापक दर्शकों तक पहुँचाते हैं, जिससे उनका प्रभाव और भी बढ़ जाता है। उदाहरण के लिए, सशक्त महिला पात्रों को उजागर करने वाले महाकाव्यों के रूपांतरण सार्वजनिक धारणाओं को प्रभावित कर सकते हैं और लैंगिक भूमिकाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव में योगदान दे सकते हैं।

शैक्षिक महत्व

शैक्षणिक परिवेश में, महाकाव्यों की आधुनिक पुनर्व्याख्या लिंग, संस्कृति और साहित्य के बारे में पढ़ाने के लिए एक समृद्ध संसाधन प्रदान करती है। इन ग्रंथों का उपयोग ऐतिहासिक और समकालीन संदर्भों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के बारे में आलोचनात्मक सोच और चर्चाओं को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। पारंपरिक और आधुनिक चित्रणों के बीच अंतर का विश्लेषण करके, छात्र लिंग भूमिकाओं की विकसित प्रकृति और सामाजिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करने और आकार देने के लिए साहित्य की शक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, पाठ्यक्रम में आधुनिक भारतीय महाकाव्यों को शामिल करने से शिक्षा में समावेशिता और विविधता को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है। ये कहानियाँ ऐसे दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं जो विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं, जिससे उन्हें साहित्य में उनके अनुभवों और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करने की अनुमति मिलती है। यह समावेशिता न केवल जुड़ाव को बढ़ाती है बल्कि छात्रों के बीच अपनेपन और मान्यता की भावना को भी बढ़ावा देती है।

चुनौतियाँ और विवाद

महाकाव्यों की पुनर्कल्पना, जबकि व्यापक रूप से मनाई जाती है, इसकी चुनौतियों और विवादों के बिना नहीं है। कुछ आलोचकों का तर्क है कि आधुनिक पुनर्व्याख्या पारंपरिक कथाओं को विकृत या अति सरलीकृत कर सकती है, संभावित रूप से उनके सांस्कृतिक महत्व को कम कर सकती है। ऐतिहासिक ग्रंथों के प्रति सम्मान को समकालीन प्रासंगिकता की आवश्यकता के साथ संतुलित करने के लिए लेखकों और रचनाकारों द्वारा सावधानीपूर्वक और संवेदनशील तरीके से काम करने की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, समाज के रूढ़िवादी वर्गों से अक्सर प्रतिरोध होता है जो इन पुनर्व्याख्याओं को सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक मूल्यों के लिए खतरे के रूप में देख सकते हैं। यह तनाव सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने और प्रगतिशील परिवर्तन को अपनाने के बीच चल रहे संघर्ष को उजागर करता है। हालाँकि, यह साहित्य के महत्व को भी रेखांकित करता है, क्योंकि यह विवाद और संवाद के लिए एक स्थान है, जहाँ विविध दृष्टिकोणों का पता लगाया जा सकता है और उन पर बहस की जा सकती है।

महाकाव्यों में वर्णित नारियों की भूमिका

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य के अध्ययन से हमें तत्कालीन समाज की स्थिति के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। साहित्य का बहुत ही विशाल भाग महाकाव्यों से भरा पड़ा है। प्राचीन महाकाव्यों में संस्कृत व हिन्दी के महाकाव्यों के अध्ययन से समाज के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। संस्कृत महाकाव्यों में प्रमुख है- रामायण, महाभारत, कुमारसम्भव, रघुवंश, बुद्धचरित, नैषधीयचरितम्, किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् आदि।

हिन्दी महाकाव्यों में प्रमुख हैं- साकेत, पद्मावत, रामचरितमानस, उर्वशी, प्रियप्रवास आदि। आज इस शोध पत्र के माध्यम से हम कुछ प्रमुख महाकाव्यों में वर्णित नारी की स्थिति पर प्रकाश डालने का लघु प्रयास करेंगे।

रामायण :

रामायण लौकिक संस्कृत का आदिकाव्य एवं हिन्दू धर्म का धार्मिक ग्रंथ माना जाता है। इस महाकाव्य में जीवन के उत्तम आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है। आज भी हमारा समाज राम राज्य की कल्पना करता है। किन्तु आदर्शों से भरे इस समाज में भी नारी की स्थिति शोचनीय ही थी, जिसका सर्वप्रमुख उदाहरण 'सीता' है। अनेक परीक्षाओं से गुजरने के बाद भी लोकमर्यादा के कारण अपनी गर्भवती स्त्री को जंगल में छोड़ देना कहाँ का न्याय है? क्या राजा राम को अपने नगरवासियों के प्रति आदर्श प्रस्तुत करना इतना अनिवार्य था कि उन्हें अपने उत्तरदायित्वों का भी ध्यान नहीं रहा? क्या एक पति का अपनी गर्भवती पत्नी के प्रति कोई कर्तव्य नहीं होता? उन्होंने यह कृत्य करके जीवन पर्यन्त के लिए कलंक ले लिया कि वे अच्छे पति नहीं थे। उन्होंने अपने पति धर्म का पालन कदापि नहीं किया, न ही अपनी पत्नी पर विश्वास किया, न ही गर्भकाल में उसे उचित सुविधा प्रदान की।

'अहल्या' जिसे गौतम ऋषि की पत्नी माना जाता है, उन्होंने सिर्फ इसलिए अहल्या को पत्थर की शिला में बदल दिया क्योंकि इन्द्र ने छद्मवेश में उनकी अनुपस्थिति में उनकी कुटिया में प्रवेश किया, जिसे कुटिया से बाहर निकलते हुए गौतम ऋषि ने देख लिया। उन्होंने यह जानने का प्रयास नहीं किया कि आखिर वास्तविकता क्या है ? यह नारी का शोषण ही तो है|

'सीता' अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न नारी थी। लंका में सीता को पहचानकर उनकी प्रशंसा करते हुए हनुमान जी ने कहा-

दुष्कर कृतवान् रामो हीनो यदनया प्रभुः।
धारयत्यात्मनो देहं न शोकेनावसीदति ।।
यदि नामः सुद्रान्तां मेदिनीं परिवर्तयेत्।
अस्थाः कृते जगच्चापि युक्तमित्येर्व मे मतिः।।

सुन्दरकाण्ड में सीता को 'रामा' के नाम से भी अभिहीत किया गया है- 'विरराम रामा अर्थात् अन्य दृष्टि से सीता, राम का ही रूप है, वह राम की अनन्य हृदया एवं प्रेयसी पत्नी है, जिसके लिए उन्होंने समुद्र पार करके रावण से युद्ध कर उसे पराजित किया एवं सीता को सम्मान सहित अयोध्या वापस लेकर आए अर्थात् राम

राज्य में नारी सम्मान बहुत महत्त्वपूर्ण था। काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायाश्चतितम्महत्। एक अन्य प्रसंग में 'कैकेयी' के चरित्र को उत्तम बताते हुए राम भरत से कहते हैं कि माता कैकेयी का पिता दशरथ से विवाह इसी शर्त पर हुआ था कि राज्य उनके पुत्र को मिले-

पुरा भ्रातः पिता नः स मातरं ते समुद्वहन्।
मातामहे समाश्रौषीद्राज्यशुल्कमनुत्तमम्॥

कैकेयी वीरवती स्त्री के रूप में स्थापित है, वह दशरथ के साथ न केवल युद्धभूमि में जाती है बल्कि अपने शौर्य का परिचय भी देती है।

इसके अतिरिक्त रामायण में कौशल्या, सुमित्रा, अनुसूया, शबरी, स्वयं प्रभा, तारा, मन्दोदरी, त्रिजटा, शूर्पणखा आदि अनेक स्त्री पात्रों का चरित्र-चित्रण किया गया है।

महाभारत :

महाभारत महाकाव्य में महर्षि वेदव्यास जी ने कहा है- 'ये स्त्रियाँ लक्ष्मी हैं, ऐश्वर्य की कामना करने वालों को इनका सत्कार करना चाहिए। वश में रखकर पालन पोषण की गई स्त्री लक्ष्मी ही होती है।"

तात्पर्य यह है कि यदि स्त्री वश में है तो लक्ष्मी नहीं तो...? 'ये धर्मग्रन्थों में पुरुष को परमात्मा माना गया है। स्त्री यदि अन्य पुरुष की कल्पना भी कर ले तो वह पापिन मानी जाती है। हमारे धर्मग्रन्थों में न केवल गलत कहा ही गया है बल्कि उनके साथ गलत व्यवहार भी किया गया है। जिसके कुछ उदाहरण निम्न हैं-

महाभारत में पाँच भाइयों का विवाह एक ही स्त्री से होना इस बात को सिद्ध करता है कि तत्कालीन समाज में नारी भोग्या थी।

युधिष्ठिर द्वारा अपनी पत्नी को दाँव पर लगाना अर्थात् नारी भावनाओं से मुक्त एक वस्तु मात्र है।

शकुंतला के जन्म लेते ही उसकी माँ के द्वारा उसका परित्याग करना।

गर्भवती शकुन्तला को न पहचान कर राजा दुष्यन्त के द्वारा उसे छोड़ देना।

पति के नेत्रहीन होने पर गांधारी के आजीवन नेत्र पर पट्टी बाँधना।

भरी सभा में द्रौपदी का निर्दयतापूर्वक अपमान करना।

इसके अतिरिक्त अनेक उदाहरण महाभारत में प्राप्त होते हैं, जो नारी के अस्तित्व के लिए अत्यन्त घातक हैं। महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है-

जो पति की देवता के समान सेवा या परिचर्या करती है, पति के अतिरिक्त किसी से हार्दिक प्रेम नहीं करती, कभी नाराज नहीं होती तथा उत्तम व्रत का पालन करती है, जिसका दर्शन पति को सुखद जान पड़ता है, जो पुत्र के मुख की भाँति स्वामी के मुख को सदा निहारती रहती है तथा जो साध्वी है एवं नियमित आहार का सेवन करने वाली है, वह स्त्री धर्मचारिणी कहीं गई हैं।

अर्थात् महाभारत काल में स्त्री पूर्णतः पुरुष पर आश्रित थी। उसका स्वयं का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था।

बुद्धचरित :

अश्वघोष द्वारा रचित प्रस्तुत महाकाव्य में नारी को कल्याणकारी मार्ग की परम बाधा के रूप में चित्रित किया गया है। स्त्री निवारण नामक चतुर्थ सर्ग में स्त्री निन्दा सम्बन्धी कपितय पद्य दृष्टव्य हैं। पंचम सर्ग में स्त्री

की निन्दा करते हुए कहा गया है कि इस संसार में वनिताओं का ऐसा विकराल व अपवित्र स्वभाव है तथापि वस्त्राभूषणों से वंचित पुरुष स्त्रियों के विषय में राग करता है ।

अश्वघोष ने स्त्री को कामपूर्ति करने वाली तथा ज्ञान प्राप्ति में बाधक माना है। वह अस्तित्वहीन एवं वासना युक्त वस्तु मानी गयी है ।

रघुवंश एवं कुमारसम्भव :

कालिदास संस्कृत के शिरोमणि कवि हैं। उन्हें कवि कुलगुरू माना जाता है। उनका काव्य 'सत्यं शिवं सुन्दरं' का मूर्त रूप है। कालिदास के काव्यों में नारी पात्रों की स्थिति नाना प्रकार की है । वह तपोवन से लेकर राजभवनों तक फैली हुई है। उनके नारी पात्र कहीं दिव्य हैं तो कहीं अदिव्य, कहीं रानी - महारानी हैं तो कहीं तापसी, कहीं दासियों है तो कहीं देव दासियाँ । प्रत्येक वर्ग में नारी पात्रों के सामाजिक जीवन के अपने - अपने चित्र हैं। बहुत कुछ ऐसा है जो नारी से लेकर दासी तक सबमें एक समान है । कालिदास की रचनाएँ वास्तव में नारी सौन्दर्य की उपासना करती हैं। कुमारसम्भव में लोक कल्याण हेतु कुमार कार्तिकेय के जन्म निमित्त शिव-पार्वती के गृहस्थ जीवन का बहुत ही सुन्दर विवेचन किया गया है। महाकवि कालिदास ने पुरातन युगों से चली आ रही नर-नारी युगल की धारणा को पार्वती और परमेश्वर के युगल का नाम दिया है। शिव जगत् को जन्म देने वाले पिता व पार्वती को माता माना जाता हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। रघुवंश महाकाव्य का प्रथम श्लोक जगत् के माता - पिता शिव व पार्वती की ही वन्दना हैं-

"वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये । ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ । । 10

कुमारसम्भव महाकाव्य में भी शिव पार्वती की जगत् के माता-पिता के रूप में ही वन्दना की गई है-

स्त्रीपुंसौ आत्मभागौ ते भिन्नमूर्तेः सिसृक्षया ।
प्रसूतिभाजः सर्गस्य तावेव पितरौ स्मृतौ ।। "

संक्षिप्त रूप से कहने का तात्पर्य यह है कि कालिदास ने अपने महाकाव्यों में नारी के उदात्त रूप का चित्रण किया है ।

साकेत :

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी का प्रसिद्ध महाकाव्य है- 'साकेत' । प्रस्तुत काव्य में राम, सीता, लक्ष्मण आदि के साथ लक्ष्मण की पत्नी 'उर्मिला' को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान देकर उनके विरह का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। साकेत का नवम सर्ग उर्मिला के विरह से तप्त आँसुओं से भीगा हुआ है । प्रेमोपासिका उर्मिला अपने मन मन्दिर में आराध्य स्वामी की प्रतिष्ठा करके स्वयं आरती की ज्वाला बन कर जल रही है । अतीत स्मृतियों की करूणा से भरी वेदना, अभिलषित एवं अप्राप्य प्रेम का संसार एवं ऐसी अपूर्ण स्थिति जिसमें सन्तुष्टि मात्र का एक प्रतिशत भी न हो । श्रृंगार परक वस्तुएँ उसकी विरहाग्नि को प्रज्ज्वलित करने में ईंधन के समान है। वह अपने मन- मंदिर में प्रिय की प्रतिमा स्थापित कर सम्पूर्ण भोगों को त्यागकर अपना जीवन योगमय बना लेती है-

मानस मन्दिर में सती, पति की प्रतिमा थाप,

जलती थी उस विरह में, बनी आरती आप,
आँखों में प्रिय मूर्ति थी, भूले थे सब भोग,
हुआ योग से भी अधिक उसका विषम वियोग।

उर्वशी :

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित महाकाव्य 'उर्वशी' में अप्सरा उर्वशी का एक गणिका के रूप में चित्रण किया गया है। वह अप्रतिम सौन्दर्य से पूर्ण एवं गंधर्वो के लिए भोग्या है । राजा पुरू के प्रति क्षणभर के लिए आकृष्ट होने पर उसे इन्द्र द्वारा मर्त्यलोक में रहने का अभिशाप मिलता है । यह मर्त्यलोक में पुरू को अपना पति चुनती है एवं उसके पुत्रों को जन्म भी देती है, किन्तु स्वर्गलोक की गणिका होने के कारण उसे पुनः उसी वृत्ति को अपनाकर वापस स्वर्गलोक जाना ही पड़ता है । दिनकर जी ने इस महाकाव्य में स्त्री के मन की बातों को इतनी सहजता से कहा है जो कोई भी स्त्री कहने में असमर्थ है। पुरुष परस्त्री गामी होने में तनिक भी संकोच नहीं करता एवं स्त्री को वस्तु के समान बताया गया है-

'उस पर भी नर में प्रवृत्ति है क्षण-क्षण अकुलाने की
नई-नई प्रतिमाओं का नित नया प्यार पाने की
वश में आई हुई वस्तु से इसको तोष नहीं है,
जीत लिया जिसको उसके आगे संतोष नहीं है।

कहने का तात्पर्य यह है कि स्त्री भोग्या एवं वस्तु स्वरूपा है, उसे वश में करना, उसे जीत लेना सामान्य बात है यहाँ तक कि घर में पत्नी के होने के बाद भी पुरूष परस्त्रीगामी है ।

रामचरितमानस :

रामचरितमानस के एक दोहे में गोस्वामी तुलसीदास ने रावण व मंदोदरी के संवाद को माध्यम बनाकर महिलाओं के स्वभाव में शामिल आठ अवगुणों के विषय में बताया है-

नारी सुभाऊ सत्य सब कहहीं । अवगत आठ सदा उर रहहीं ।
साहस अनृत चपलता माया । भय अविवेक असौच अदाया । ।

अर्थात् नारी के स्वभाव के विषय में सत्य ही कहा गया है कि आठ अवगुण हमेशा उनके साथ रहते हैं। ये अवगुण हैं- दुःसाहस, झूठ बोलना, चंचलता के कारण निर्णय न ले पाना, माया रखने में माहिर, डरपोक, अविवेकी, कठोर एवं साफ-सफाई के साथ न रहने वाली ।

एक अन्य स्थल पर तुलसीदास जी कहते हैं कि स्त्री का पुरुष के बिना कोई अस्तित्व नहीं है-

"जिय बिन देह नदी बिनु बारी ।
तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ।"

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में सीता के उदात्त रूप का चित्रण किया है एवं साथ ही समाज में व्याप्त नारी स्थिति पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी, उसे वस्तु समान एवं निष्कृष्ट माना जाता था । इसी कारण एक प्रसंग में तुलसीदास जी ने कहा है-

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी ।

सकल ताड़ना के अधिकारी ।।

यह स्थिति नारी के अस्तित्व के लिए अत्यन्त ही घातक एवं अपमान जनक है

पद्मावत :

मलिन मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' महाकाव्य में नारी के एक ऐसे रूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, जो मध्यकालीन कुप्रथाओं से ओत-प्रोत था । नागमती एवं पद्मावती दोनों एक दूसरे की सपत्नीक थीं, इसके बाद भी उनसे आपस में प्रेम से रहने की अपेक्षा की जाती है। क्या कोई पुरुष यह स्वीकार करेगा कि उसकी पत्नी किसी अन्य पुरुष को भी पति बना ले एवं प्रथम पति को इसमें कोई आपत्ति न हो? यह भारतीय समाज में आज भी निन्दनीय माना जायेगा ।

पद्मावत महाकाव्य में 'सती प्रथा' का भी उल्लेख्य किया गया है अर्थात् पति की मृत्यु के बाद पत्नी को उसकी चिता के साथ आत्मोत्सर्ग करना अनिवार्य था। जब रत्नसेन की मृत्यु हो जाती है तब उसकी दोनों पत्नियाँ पद्मावती व नागमती सती हो जाती है। जब अलाउद्दीन दुर्ग पर आक्रमण करता है तो हाथ मलता रह जाता है और बोल पड़ता है कि 'यह संसार झूठा है'-

छार उठाइ लीन्ह एक मूठी ।
दीन्ह उड़ाइ परिथमी झूठी ।।

इसके अतिरिक्त अन्य प्राचीन महाकाव्यों जैसे- यामा, प्रियप्रवास, नूरजहाँ, कामायनी आदि में नारी के विषय में अनेक विचार धाराएँ सामने आई है। सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उसी के बलबूते भारतीय समाज खड़ा है। किन्तु फिर भी वह सदियों से ही क्रूर समाज के अत्याचारों एवं शोषण का शिकार होती आई है। उसके हितों की रक्षा के लिए एवं समानता तथा न्याय दिलाने के लिए अनेक संस्थाएँ प्रयासरत है। महिला विकास के लिए विश्वभर में महिला दिवस मनाया जाता है। नारी की क्षमताओं को पुरुष प्रधान समाज रोक नहीं पाया। उसने स्वतंत्रता संग्राम जैसे आन्दोलन में कमर कसकर भाग लिया और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान में बराबरी का दर्जा पाया।

नैसर्गिक रूप से स्त्री - पुरुष एक दूसरे के पूरक है। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ रहा है वैसे-वैसे भारतीय नारी के कदम भी आगे बढ़ रहे हैं। आज वह 'देवी' नहीं बनना चाहती बल्कि सच्चे अर्थों में इंसान बनना चाहती है। आज की नारी ममतामयी है, त्यागमयी है। नारी त्याग और साधना के बलबूते पर समाज में प्रत्येक पहलू से जुड़ी है। वह आत्मनिर्भर है, अपने अधिकार व कर्तव्य के प्रति सचेत है, संघर्षरत है । यद्यपि नारी शिक्षा से आज कामकाजी महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है तथापि हमारे समाज में निःस्वार्थ सेवा हर क्षेत्र में है, जो अमूल्य है ।

निष्कर्ष

आधुनिक भारतीय साहित्य के महाकाव्यों में महिलाओं की भूमिका साहित्यिक अन्वेषण के एक जीवंत और परिवर्तनकारी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है। पारंपरिक कथाओं की पुनर्कल्पना और नए पात्रों और विषयों की शुरूआत के माध्यम से, आधुनिक लेखकों ने समकालीन मुद्दों को संबोधित करने और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली मंच बनाया है। ये कथाएँ न केवल महिलाओं की ताकत और लचीलेपन का

जश्न मनाती हैं, बल्कि पाठकों को लिंग, शक्ति और पहचान के सवालों से सार्थक तरीके से जुड़ने की चुनौती भी देती हैं। कहानी कहने की सीमाओं को आगे बढ़ाते हुए और महिलाओं के अनुभवों की जटिलताओं को अपनाते हुए, आधुनिक भारतीय साहित्य एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत साहित्यिक सिद्धांत में योगदान देता है। यह महाकाव्यों की प्रेरणा, उत्तेजना और परिवर्तन करने की स्थायी शक्ति के प्रमाण के रूप में कार्य करता है, यह सुनिश्चित करता है कि ये प्राचीन कहानियाँ आधुनिक दुनिया में प्रासंगिक और गूंजती रहें।

सन्दर्भ पुस्तकें :

[1] थारू, सूसी और के. ललिता। भारत में महिला लेखन: 600 ईसा पूर्व से लेकर बीसवीं सदी के आरंभ तक। CUNY में नारीवादी प्रेस, 1991।

[2] सुंदर राजन, राजेश्वरी। वास्तविक और कल्पित महिलाएँ: लिंग, संस्कृति और उत्तर-उपनिवेशवाद। रूटलेज, 1993।

[3] रिचमैन, पाउला (संपादक)। कई रामायण: दक्षिण एशिया में कथात्मक परंपरा की विविधता। यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, 1991।

[4] वाल्मीकि रामायण सु0का0 15–55 (16, 13)

[5] वाल्मीकि रामायण सु०का० 36 / 31

[6] वाल्मीकि रामायण बा0का0 सर्ग 4-7

[7] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड

[8] महाभारत- 11.5

[9] महाभारत, अनुशासन पर्व अ0 146, श्लोक 37.52

[10] बुद्धचरित 4/16/21

[11] बुद्धचरित 5-64

[12] रघुवंशम् 1/1

[13] कुमारसंभव 2/17

[14] साकेत

[15] उर्वशी (प्रथम सर्ग)

[16] रामचरितमानस (रामायण मंदोदरी संवाद)

[17] रामचरितमानस

[18] रामचरितमानस

[19] पद्मावत (पद्मावती - नागमती सती खण्ड)